Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal Impact Factor 5.69 ISSN No. 2456-1665

एक थी मैना एक था कुम्हार - भूमिहीन हो रहे किसानों की दास्तान

संजय अर्जुन गायकवाड
शोध छात्र
sanjaykumar2710@gmail.com

देश में सबसे अधिक रोजगार देने वाला व्यवसाय खेती है और खेती करने वाले लोगों को किसान कहा जाता है। किसान जमीन को जोतकर उससे फसल निकलता है।इस फसल को बाजार में बेचकर वह अपना और परिवार का गुजारा करता है। परिवार के सदस्य भी उसे इस काम में मदद करते हैं।गांव के सभी लोग लगभग इसी व्यवसाय से जुडे हुई है। खेती से जुड़े अन्य व्यवसाय भी करते हैं पर मुख्य व्यवसाय उनका खेती है। यह स्थिति सिर्फ एक गांव अथवा देहात की नहीं है बल्कि देश के सभी गांव की हैं।इसलिए भारत को कृषिप्रधान देश कहा जाता है। डॉक्टर बद्री विशाल त्रिपाठी लिखते हैं "कई अर्थव्यवस्था यथा म्यांमार ,चीन ,भारत, पाकिस्तान ,बांग्लादेश ,इंडोनेशिया आदि में 50% से अधिक जनसंख्या कृषि और संबद्ध क्रियाओ से अपनी अजीविका कामाती है।" (1) यह व्यवसाय किसान पीढ़ी दर पीढ़ी करते आए हैं।ऐसा नहीं है कि किसान इस व्यवसाय के द्वारा सकून और आर्थिक संपन्नता से भरा जीवन जीते आया है।उसे समय-समय पर कई समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जैसे अकाल बाढ़ सूखा और ओले आदि। आज भूमंडलीकरण और औद्योगीकरण का प्रभाव भी इस व्यवसाय पर हुआ है। जिससे नई समस्याओं का सामना किसानों को करना पड़ रहा है। खेतों में ट्रैक्टर और हार्वेस्टर जैसी मशीनों का उपयोग करने से बेरोजगारी बढ़ने लगी है। विदेशी बीज, खाद और दवा अधिक रुपए में खरीदनी पड़ रही है। जमीन में पानी का स्तर नीचे जाने से सिंचाई की समस्या निर्माण हुई है। इस तरह आज नई-नई समस्याएं किसानों के सामने निर्माण हो रही है। उन्हीं में से एक भूमि अधिग्रहण की समस्या है। किसी परियोजना के लिए सरकार द्वारा भूमि अधिग्रहण करना किसानों के लिए एक नई समस्या बन गई है। इस भूमि अधिग्रहण से बेघर और भूमिहीन हुए किसान की दास्तान को उपन्यासकार हरि भटनागरने एक थी मैना एक था कुम्हार उपन्यास के द्वारा उजागर किया है। उपन्यासकार ने फैंटेसी का उपयोग कर आज की इस नई समस्या को बड़ी कलात्मक के साथ उजागर किया है।

'एक थी मैना एक था कुम्हार' (2014)उपन्यास में प्रमुख दो कथाएं है। पहली मैना की कथा है और दूसरी कुम्हार की कथा है।जो खेती के साथ-साथ मिट्टी के बर्तन बनाने का व्यवसाय भी करता है। मैंना की कथा इस प्रकार है- मैंना का जोड़ा एक राज्य में रहता था।जोड़े में से मैंना बहुत सुंदर गाता था।

उसके गाने की और कंठ की चर्चा पूरे राज्य में फैल गई थी।उस राज्य के राजा ने हुक्म दिया कि मैंना को पकड़ लाओ।कई बार प्रयास करने के बाद गंजे नाटे आदमी ने चालाकी से मैंना के जोड़े को पकड़ लिया। दोनों को अलग किया गया। मैना को राजाने हुक्म दिया कि तुम गाओ लेकिन मैंना की जिद थी कि वह सिर्फ अपनी पत्नी मैंना को देखकर ही गाता है। राजा के कहने पर जब मैंना ने गाने से इनकार कर दिया तो राजा ने मैंना के पर नोच कर उखाड़ लिए।पांव मरोड़ कर तोड़ डाले और अंत में गर्दन मरोड़ कर मैना को मार डाला। उसी रात पत्नी मैंना ने उस राज्य को छोड़ दिया ।आकाश में घूमते हुए दो-तीन दिन बाद मैना उड़ते हुए भोला कुम्हार के आंगन में नीम के पेड़ पर पहुंच गई। आंगन में नीम के पेड़ पर रहने लगी। कुछ दिनों बाद कुम्हार के परिवार की सदस्य बन गई। उनके सुख-दुख में साथ देने लगी।

दूसरी कथा है कुम्हार की जो पित्रार्जित रूप में मिली जमीन पर खेती करता था और अपने परिवार का गुजारा करता था। साथ-साथ मिट्टी के बर्तन बनाकर उसे बाजार और शहर में जाकर बेचता था। भोला कुम्हार के परिवार में पत्नी परबतिया, बेटा गोपी और बड़ेमियां नमक गधा था। इस गधे पर ही कुम्हार जंगल से मिट्टी लाकर उसके बर्तन बनाता और गधे पर ही लाधकर बाजार में और शहर में बेचता था। परबतिया पति को इस काम में मदद करती थी। इस तरह कुम्हार कई सालों से खेती कर रहा था और बर्तनों का व्यवसाय कर रहा था। एक दिन पटवारी कुम्हार के घर आया। "दरअसल कुम्हार की जमीन क्या पूरी बस्ती को कब्जियाने का मामला था। मौके की जमीन थी शहर का छोर, चारों तरफ खुलापन,हरियाली, पेड़ पौधों का विस्तार। पूरी बस्ती एक प्रभावी मंत्री के भाई को सौपी जानी थी।शहर का यह छोर उसे भा गया था। किसी भी कीमत पर वह इसे पाना चाहता था।और यहां एक बहुत बड़ी फैक्ट्री लगाना चाहता था। इसी सिलसिले में ऊपर ही ऊपर मंत्रनाए हुई।कलेक्टर को प्रभावी कार्रवाई के लिए निर्देश दिए गए।वह इस दिशा में सक्रिय हुआ। उसने संबंधित अधिकारियों से मंत्रनाए कि।अधिकारियों ने पटवारी को पकड़ा।पटवारी को किसी भी तरीके से यह काम करके देना था।"(2)

इसलिए पटवारी कुम्हार के घर पर आया था। कुम्हार को जानबूझकर परेशान करने के लिए पटवारीने भोला कुम्हार, जो जंगल से मिट्टी लता था उस पर टैक्स लगाया था। जिससे कुम्हार का मिट्टी से बर्तन बनाने का व्यवसाय बंद हो गया था। जमीन हथियाने के विरोध में कुम्हारऔर बस्तीवालों ने संगठित होकर आंदोलन छेडा पर अंग्रेजी नीति के तहत 'फूटडालो और राज करो' का उपयोग कर सरकारी करिंदों ने आंदोलन को तीतर बितर कर दिया। पटवारी ने साजिश रच कर भोला कुम्हार के कागज पर दस्तखत लिए थे। जिसमें लिखा था की जमीन मैं खुद की मर्जी से दे रहा हूं। एक दिन सरकारी कर्मी आकर जमीन पर कब्जा करते हैं। भोला कुम्हार का घर भी तोड़ देते हैं। बस्ती की जमीन पर भी कब्जा कर लेते हैं और सभी को वहां से खदेड़ देते हैं। कुम्हार यह सब देख परिवार के साथ जंगल में चला जाता

है।तब हर बार कुम्हार को मुसीबत में साथ देने वाली मैना यह सब देख हैरान होती है।तब कुम्हार मैना से कहता है "कोई कितनी बार हमें उजड़ेगा? हर बार बस जाएंगे। जब तक सांसा तब तक आंसा!... मैं तो यहां अपने अशांत मन को शांत करने के लिए आ गया था।सच पूछा जाए यह मेरी जगह नहीं है।मेरी जगह वहां है जहां अपने साथ के लोग खड़े हुए हैं।"(3)

इस तरह कुम्हार की हिम्मत देख मैंना को अपने पति मैंना की याद आती है।वह भी निडर और दृढ़ विचार वाला व्यक्ति था। इस तरह दो प्रमुख कथाओं के द्वारा उपन्यासकारने राजा का 'हम करे सो कायदा' और आजादी के बाद प्रजातंत्र में भी किसानों पर हो रहे अन्याय को उजागर किया है। एक और मैना है जिसे राजा और राज्य से लेना-देना नहीं वह तो अपनी पत्नी को देख सुरीला गीत गाता था। राजा का हुक्म उसने नहीं माना इसलिए राजा ने उसे मार डाला। दूसरी ओर आजाद देश में किसान भी गांव में अपना जीवन सुख दुख को साथ लेकर जी रहा है। कई समस्याएं होने के बावजूद जी रहा है। समस्याओं से लड़ रहा है। पर प्रजातंत्र में अपने ही नेता उनका शोषण कर रहे हैं।जिनके लिए सरकारी व्यवस्था तैयार की गई है उन्हें ही यह यंत्रणा नेता के साथ साठ-गांठ कर लूट रही है। परियोजना का नाम देकर पित्रार्जित जमीन किसानों से जबरदस्ती छीनी जा रही है। विरोध करने पर सरकारी यंत्रणा द्वारा दबाव डाला जाता है। तब किसान बेबस हो जाता है और हार मानकर अपनी माँ समान जमीन को छोड़ देता है। सरकार उन्हें मुआवजा देती है पर मुआवजे के रुपए खर्च हो जाते हैं और वह किसान भूमिहीन होकर मजदूर बन जाता है। आज देश में कई राज्यों में किसानों की जमीन परियोजनाओं के नाम पर हथियाई गई है और किसान भूमिहीन बन गए है। भारत किसानों का देश है पर आज वही किसान बेघर होकर मजदूर बनता जा रहा है। यहां तक कि आज किसान कर्ज और विभिन्न समस्याओं से तंग होकर आत्महत्या कर रहा है।मैनेजर पांडेय लिखते हैं "यह मानवता के इतिहास की एक भयावह त्रासदी है और मानवीय समाज व्यवस्था का भीषण अपराध भी।" (4)

उपन्यासकार हरि भटनागर ने वैश्वीकरण और औद्योगीकरण से निर्मित किसान की इस नई समस्या को बड़ी चतुराई से उजागर किया है। सरकारी कर्मियों से मिली भगत कर किसानों की जमीन हड़पने वालें राजनेताओं की साजिश का भंडाफोड़ कर इस समस्या की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है। साथ-साथ जमीन अधिग्रहण करते वक्त किसान एवं समाज ने जागरूक रहकर जमीन उचित कार्य के लिए अधिग्रहण की गई है क्या? इस ओर भी ध्यान रखना चाहिए यह संदेश भी दिया है। किसान की जमीन अधिग्रहण करते समय किसानों को मुआवजे में सिर्फ रुपया न देकर दूसरे गांव में जमीन और कुछ रुपए सरकार देती है तो इस समस्या का समाधान हो सकता है। किसान को भूमिहीन और मजदूर बनने से रोका जा सकता है। "प्रेमचंद किसान को समाज का आधारभूत और उत्पादक वर्ग मानते

हैं।उनके लिए किसान की उन्नति ही देश की उन्नति है और किसान की बदहाली ही देश की बदहाली है। किसान का जीवन ही सारे देश के अन्य वर्गों के जीवन को निर्धारित करता है।"(5)

इस तरह किसान,खेती और उसके काम का सम्मान ही कृषिप्रधान देश की उन्नति कर सकता है। हमारे देश की सरकार तथा राजनीतिक पार्टीयों कों यह ध्यान देना चाहिए की कोई भी परियोजना तयार करते समय किसानो पर अन्याय न हो। लेकिन स्वार्थी राजनेताओं द्वारा यह अन्याय आज हो रहा है जिसे उपन्यासकार ने फैंटासी शैली में उजागर किया है। उपन्यास में दो प्रमुख कथाए हैं। साथ-साथ उप कथाएं भी हैं जो कथानक को रोचकता के साथ आगे बढ़ती है। चरित्रों की संख्या सीमित है लेकिन विशेषता इस बात में है कि उपन्यास में बड़ेमियां और मैंना पशु-पंछी होकर भी बातचीत करते हैं और कथानक को प्रभावि बनते है। भाषा में सहजता और प्रभावात्मकता है जो ग्रामीण परिवेश को उजागर करने में सक्षम है। विवेकहिंन राजसत्ता में सुंदर गाने वाली पंछी की और जहां स्वार्थ से घिरी राजनीति एवं राजनेता हो वहां पर किसान की स्थिति भी क्या हो सकती है यह बताना उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है।

***संदर्भ सूची**

1) डॉ बद्री विशाल त्रिपाठी -भारतीय कृषि, पृ. 3
2) हरि भटनागर- एक थी मैना एक था कुम्हार, पृ. 65
3) वही पृ. 163
4) संजीव - फॉस , फ्लैप
5)प्रो रामबक्ष प्रेमचंद और भारतीय किसान, पृ. 221